

Teacher - A.K. Sinha 02.11.21

Date

Page

Topic - Secondary Mental Mechanisms

गौण या द्वितीयक मनोरचनाएँ ~~विभिन्न~~ निम्नलिखित हैं: —

1. प्रक्षेपण (Projection) : — प्रक्षेपण का तात्पर्य आरोपण (To project) से है। यह अल्पमन की साधारण गौण या द्वितीयक मनोरचना है; जिसका उपयोग यान: सभी व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में करते हैं। इसमें व्यक्ति अपने व्यक्तित्व की कमजोरियों या दुर्गुणों को दूसरे के उपर आरोपित करता है या प्रक्षेपता है। Freud ने इस मनोरचना का वर्णन करते हुए कहा है कि व्यक्ति का कुछ इच्छा प्रवाह या प्रेरणाएँ उसके (Ego) अहं के लिए बहुत अधिक घातक या खतरनाक होती हैं। ~~इन्हें~~ इन प्रेरणाओं के घातक परिणामों की आशंका से व्यक्ति में चिंता की स्थिति उत्पन्न होती है, जिससे अपने के लिए उन्का अहं उन इच्छा-प्रवाहों अथवा प्रेरणाओं को दमित रखने के उद्देश्य से दूसरे व्यक्ति पर आरोपित करता है। एका कान से दमित इच्छा-प्रवाह के निष्कारण का एक सुगम माध्यम मिल जाता है और अहं की सुरक्षा भी हो जाती है। प्रक्षेपण की प्रक्रिया चेतन और अचेतन दोनों स्तर पर होती है। J. D. Page ने प्रक्षेपण की परिभाषित करते हुए कहे हैं कि: —

"Attributing to or observing in others one's impulse and traits is called projection"  
अपनी प्रेरणा से खतर होता है कि अपनी



प्रवृत्तियों तथा शीलगुणों को दूसरे पर आरोपित करना अथवा दूसरों में देरना प्रक्षेपण कहलाता है।

उदाहरण स्वरूप जब कोई व्यक्ति किसी से घृणा करता है तब वह यह कहता है कि वह मुझसे घृणा करता है, जबकि उसे कहना चाहिए कि मैं उससे घृणा करता हूँ। स्पष्ट योरी अनेकाला दूसरे को जोर कहता है। उक्त खण्ड में कुछ उदाहरण भी प्रदर्शित हैं - यथा - 'काग कोपे की काला कहता हूँ', आत्मद की गुनी महमूद के सिर 'उलादि।

2. आत्मिकरण (Identification) :- दूसरे के गुणों का अनुसरण करने की प्रवृत्ति को आत्मिकरण (Identification) कहा जाता है। उक्त मंगोर-मना के अन्तर्गत व्यक्ति अपनी कमजोरियों या दुर्गुणों या पर्याप्त सल्लो हेतु अभ्यन्तन रूप से किसी बड़े नेता, फिलॉसॉफर, शिक्षक आदि के वैषम्यता, बोल-चाल, रहन-सहन, व्यवहार शैली आदि का अनुसरण या अनुकरण करता है। उक्त प्रकार यह कहा जा सकता है कि 'आत्मिकरण' की प्रवृत्ति-मना द्वारा व्यक्ति अपने 'स' या 'आटे' (self or ego) को दूसरे के व्यक्तित्व के साथ-से जोड़ने की चेष्टा करता है और यह विश्वास करता है कि उसने किसी दूसरे व्यक्ति के व्यक्तित्व का गुण है।

'आत्मिकरण' और 'अनुकरण' में कुछ अंतर भी है। 'अनुकरण' एक चेतन प्रक्रिया है जो जानबूझ कर किया जाता है। परिणाम स्वरूप उसके व्यवहार में अनापत्ति धरणाई पड़ता है। यद्यपि 'आत्मिकरण' में अनुकरण अभ्यन्तन रूप से किया जाता है। उक्त व्यक्तित्व



अमेरन हम से किसी दूसरे के व्यक्तित्व का अपना आदर्श बना लेता है। तथा- उनके शील-गुण को अपने में अर्जित (Acquire) कर लेता है। छोटे बच्चे- अपने माता-पिता को ही प्रतिमान बना लेते हैं तथा ~~उन~~ उनके शील-गुण को अपने में अर्जित कर लेते हैं। इसी प्रकार स्कूल के बच्चे अपने किसी प्रिय शिक्षक अपना आदर्श के साथ-साथ अपना आदर्श भी लेते हैं। इस प्रकार अपनी कमजोरियों या अप्रियताओं के कारण उत्पन्न होने वाली भावना या विचार-प्रवाह का वह है जो उनका अंदर आहत होने से बच जाता है।

3. अन्तःशीपण (Introspection) :- अन्तःशीपण प्रशीपण के विपरीत क्रिया है। इसमें व्यक्ति दूसरों के व्यक्तित्व के शील-गुणों को अपने व्यक्तित्व का अभिन्न अंग मानता है। अन्तःशीपण की प्रक्रिया में व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में जिन गुणों या अप्रियताओं की कमी करता है तथा अपने स्वयं के किसी दूसरे व्यक्ति में पाता है, उसे वह अपना ही एक अभिन्न अंग समझता है। जैसे :- यलोक माता-पिता अपनी संतान की श्रेष्ठ संरचना और प्रगति से ~~प्रभाव~~ <sup>प्रशान्त</sup> होते हैं। इसका कारण यह है कि वे अपने संतान को अपना प्रतिनिधि मानते हैं। इस मनोपण की अभिव्यक्ति सामान्य तौर पर व्यक्ति अपने सामान्य जीवन में भी उन कथनों द्वारा करता है - 'आज सदा हमारे दुःख में रहते हैं', 'आज हमारे जीवन के प्रेरणा स्रोत हैं' इत्यादि।



4. विस्थापन (Displacement) :- विस्थापन भी एक सामान्य 'अंतःसुरक्षात्मक-मनोरचना' है। इसके अन्तर्गत अपने संवेगात्मक भावों (गैर-मेम, इन्फो, एन्फो) को एक वस्तु या व्यक्ति से दूसरी वस्तु या व्यक्ति या अभेदन रूप से विस्थापित करना है। जिससे कि उलझा मानसिक तनाव को होता है। व्यक्ति अपने सामान्य जीवन में वातावरण के साथ वातावरण स्थापित करने के क्रम में अनेक तरह की संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं का अनुभव करता है, परन्तु सामाजिक एवं सांस्कृतिक सीमाओं के कारण वह अपनी प्रकार की संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं का सहज प्रदर्शन नहीं कर पाता है। परिणामस्वरूप उलझी ऐसी प्रतिक्रियाएँ अभेदन में दमित हो जाती हैं। अतः अभेदन में बाधकारी हुई इन संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं को उलझे अवस्था में व्यक्ति या वस्तु से दूर कर अलग करने से (अभेदन रूप से) किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु या प्रजात करवाता है। उदाहरण स्वरूप :- पत्नी के प्रति उलझा क्रोध के भाव को प्रति द्वारा पालतु कुत्ते या बच्चों या निकालना, कार्यालय के ~~प्रशासनिक~~ प्रशासनिक अधिकारियों के प्रति उलझा क्रोध को दूर कराने या पत्नी या निकालना इत्यादि।

5. कारिपूर्ति (Compensation) → यह एक वाँप मनोरचना है जिसमें व्यक्ति अपने लक्ष्य या इच्छा को प्राप्त करने में असमर्थ हो जाता है तो वह उलझा और अथवा दूसरे लक्ष्य की ओर सहजता प्राप्त करने के लिए उन्मुख हो जाता है। ऐसा करने से निराशा के कारण उलझा तनाव कम होता है या



शान्त हो जाता है। व्यक्ति के ऐसे व्यवहार को  
 क्षतिपूर्तिपूर्णक (Compensatory Behaviour) कहा  
 जाता है। इस सन्दर्भ में ~~कई~~ कई प्रथम उदाहरण  
 Freud ने अपने रोगियों के- रोग वर्णन- के क्रम  
 किया है, जो अपनी व्यक्तिगत या धार्मिक दोषों के  
 कमी रक्षा करने हेतु ऐसा व्यवहार करते हैं।  
 बाद में Miller ने भी इस गौरवण का  
 वर्णन किया है। इनके अनुसार यदि जब किसी  
 क्षेत्र विशेष में 'हीनता की भावना' से ग्रस्त होता है,  
 तब वह अहं (Ego) या 'स्व' (Self) को दुर्बल या  
 हीनता की भावना से रक्षा करने हेतु क्षतिपूर्तिपूर्णक  
 प्रतिक्रिया करता है। क्षतिपूर्तिपूर्णक प्रतिक्रियाएँ  
 वांछनीय-संघ-अवांछनीय-दोनों प्रकार की होती हैं।  
 क्षतिपूर्तिपूर्णक प्रतिक्रियाओं के अनिर्दिष्ट रूप  
 'अतिक्षतिपूर्ति' (Over Compensation) कहलाता  
 है। कभी-कभी व्यक्ति अपनी (Ego) अहं की रक्षा  
 हेतु इस गौरवण का भी सहारा लेता है।